चौथा अध्याय

109

xxx हिमांशु जोशीजी की कहानियों की विशेषताएँ xxx

हिमांशु जोशीजी नई कहानी के एक सशक्त और आँचलिक बोध करानेवाले कहानीकार हैं । इनकी कहानियों में नई कहानी की कतिपय विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, जो अपना विशेष महत्व रखती है । इसलिए हम जोशीजी की कहानियाँ और विचार को ध्यान में रखकर नई कहानी के कई मुख्य सूत्रों का आधार लेकर जोशीजी की कहानियों की विशेषताएँ बताने जा रहे हैं, जैसे जोशीजी की कहानियों में वास्तविकता, पहाड़ी जीवन के चित्र, शैली शिल्प की नवीनता आदि । "

।) जोशीजी की कहानियों में वास्तविकता :-

हिमांशु जोशीजी सत्य और घटित घटनाओं का समर्थन करनेवाले कहानीकार हैं । जोशीजी की कहानियों में उनका भोगा हुआ, देखा हुआ और सुना हुआ यथार्थ है । इसलिए उनकी कहानियाँ समसामायिक यथार्थ समस्याओं का उद्‌घाटन करने में सफल हुई है । उन्होंने व्यक्तिगत और समयगत अनुभव की कहानियाँ लिखी हैं । यही कारण है कि उनकी कहानियाँ देखी हुई, आस - पास की सत्य एवं जीवंत घटनाएँ लगती हैं ।

संयुक्त परिवार का विघटन " आँखें " कहानी के माध्यम से उद्‌घाटित किया है, जो लेखक की अपनी असली कहानी लगती है, क्योंकि उसमें " जोशीजी " नाम का उल्लेख भी आया है । दूसरी बात जोशीजी का परिवार भी पहले संयुक्त परिवार था, जिसका प्रमाण उनके जीवन - चरित्र में मिलता है । " जलते हुए डैने का सेमुअल रामदास पहाड़ी क्षेत्रका स्वाधीनता सेनानी शहीद विक्टर मोहन जोशी का चित्र है "[1] जिसका उल्लेख लेखक ने खुद ही आठवाँ स्वर में किया है । " आदमी जमाने का " कहानी सन्ताप से छुटकारा पाने के लिए लेखक ने लिखी थी, क्योंकि सरकारी राशि का सही उपयोग न करने के कारण जोशीजी को दुःख हुआ था । उनकी " कोई एक मसीहा " आज की यथार्थ घटना के पास (नजदीक) है, क्योंकि आजकल महिलाश्रमों में जो कुछ भी चलता है, उसका सत्य दर्शन इस कहानी में हुआ है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

" आदमियों के जंगल में ", " दंशित ", " फासला ", " अभाव ", " सिमटा हुआ दु:ख " इन कहानियों के माध्यम से जोशीजी ने बेरोजगारी का असली, जीवंत और सत्य चित्रण किया है ।

" भेड़िए ", " चील ", " किसी एक शहर में ", " नाव पर बैठे हुए " कहानियों में नौकरी पेशा - औरतों की स्थिति के समीप का चित्रण है, जो नौकरी करनेवाली स्त्रियों के साथ अकसर होता है ।

" बूंद पानी ", " जीना - मरना ", " यह सब " अ " संभव है " इन कहानियों में महानगरीय माहौल का यथार्थ चित्रण है । " अनचाहे " में यथार्थ के धरातल पर ही स्त्री - पुरुष प्रेम - संबंध और संदेह का चित्रण है । इसतरह जोशीजी की कहानियाँ यथार्थ के बहुत समीप पहुँची हैं, इसलिए उनकी कहानियाँ पढ़ते समय पाठकों को अपनी कहानी लगती है । उनकी कहानियाँ यथार्थ के सदुपयोग की गवाही देती है । " कटी हुई किरणें, " तरपन " आदि कहानियों में संस्कृति और रुढि, परंपरा का आँचलिक यथार्थ चित्र दिखाई देता है । "हरे सूरज का देश ", " रास्ता रुक गया है ", " सीमा से कुछ और आगे " आदि कहानियों में पहाड़ोंकी गरीबी का वास्तविक दु:ख स्पष्ट हुआ है । इस तरह जोशीजीने महानगर और पहाड़ी जीवन खुद जिया है, देखा है, इसलिए संवेदना के धरातल पर लिखी उनकी कहानियाँ यथार्थ का वास्तविक चित्रण कराती हैं ।

बेरोजगारी को लेकर लिखी गयी कहानियाँ " दंशित ", " फासला ", " अभाव ", " आदमियों के जंगल में " आदि कहानियें इसलिए सत्य लगती हैं कि आज सारे भारत में बेरोजगारी की एक ज्वलंत समस्या खड़ी है । इसी कारण युवक हताश, निराश, अतृप्त दिखाई देता है । जोशीजी ने दिल्ली में इस समस्या का असली स्वरूप देखा है इसलिए वे कहानियाँ अपना जबरदस्त प्रभाव छोड़ पाठकों पर आघात पहुँचाती है ।

जोशीजी की ग्रामीण कहानियों में अपने परिवेश का सही और सार्थक चित्रण हुआ है, ये कहानियाँ सामाजिक और आर्थिक समस्या का प्रामाणिक बोध कराती हैं । महानगरीय जीवन कितना महाभयंकर है, उसमें मध्यमवर्गीय आदमी अपने अस्तित्व, आदर्श, नैतिकता और

मानवीयता के लिए लड़ते - लड़ते विवश होकर जीता - जागता यंत्र हो जाता है, मृतवत होकर जीता है । यह भी उनकी कहानियों में प्रस्तुत है । इस तरह जोशीजी के कहानियों में वास्तविकता का दर्शन होता है ।

2) **पहाड़ी जीवन का चित्रण** :-

जोशीजी प्रमुख रूप से आंचलिक कहानीकार और अपनी मिट्टीसे नाता जोडनेवाले लेखक हैं । उनकी विश्वस्त भूमि पर्वतांचल की है । उन्होंने अपना बचपन पहाड़ी में गुजारा है । उनकी अधिक तर कहानियाँ पर्ततांचल की हैं । उन्होंने पहाड़ी लोगो का दुःख दर्द, पीड़ा, आदि को प्रत्यक्ष देखा है, विशेषतः दुर्बल व्यक्तियों और विशेष रूप से नारियों का दुःख देखा है । इसलिए उनकी इन कहानियों में संवेदना दिखाई देती है । उन्होंने " तरपन " कहानी के माध्यम से आर्थिक और सांस्कृतिक शोषण को उद्घाटित किया है । " काला धुआँ ", " मनुष्य - चिन्ह ", " हत्यारे " को लेकर काम - वासना के व्दारा स्त्री को कैसे सताया जाता है, मानवीयता का ह्रास, नैतिक मूल्यों का पतन, नारी अत्याचार का दर्शन कराया है । " मनुष्य चिन्ह " की गोविंदी अंततक बूढे बाप और गरीबी के कारण अत्याचार सहती है, " काला धुआँ " की नारी दो रोटियों के लिए लोगों की नजरों की शिकार होती है, जिसे बचने के लिए अंत में पति को गवाकर जंगल में भागना पड़ता है । " हत्यारे " की नारी तो कमजोर पति और बलवान समाज को देखकर अत्याचार सहकर अंत में आत्महत्या करती हैं । " अन्ततः " का बिरजू गाँव के अनपढ़ लोगों का प्रतिनिधित्व करता हैं । उन्हें रामलीला, कृष्णलीला, भूमिदान के माध्यम से समझाते वह मर जाता है । " रास्ता रुक गया है", " अन्तराल ", " अपने ही कस्बे में " इन तीन कहानियों में यह चित्रित किया गया है कि कस्बे का परिवर्तन और गाँवो का विकास कैसे हुआ । " रास्ता रुक गया है " में मजूरी करनेवाले पहाड़ी लोगों का जीवन चित्रित है । एक दिन मजूर कामपर नहीं गया तो उसे खाना मिलना मुस्किल है । राशन भी मिलावट का मिलता है, सरकारी अधिकारी या नेता गाँव का विकास नहीं होने देते । जो इंजीनियर विकास चाहता है, उसका तबादला होता है । " सीमा से कुछ और आगे " में पहाड़ की आर्थिक विपन्नता चित्रित है । " तरपन " में

पिण्डदान का सांस्कृतिक या धार्मिक पुट लेकर पहाड़ी दरिद्रता पर प्रकाश डाला गया है । " बुझें दीप " में पहाडियों में अस्पताल की आवश्यकता बतायी हैं । " कटी हुई किरणें " में पहाड़ो में अंतरजातीय विवाह की सफलता और विरोध दोनों चित्रित है ।

इस प्रकार जोशीजी की आँचलिक कहानियों में आर्थिक विपन्नता विवाह, नारी - अत्याचार, बेरोजगारी समस्या, काला - बाजार, तस्करी, रिश्वत और आम - आदमी की अंतर्पीडा आदि पहाड़ी जीवन का चित्र उभरा है । इनकी कहानियों में पहाड़ी बोली भाषा का प्रयोग भी हुआ है । जोशीजी अपनी कहानियों के माध्यम से पहाड़ी जीवन का चित्र स्पष्ट करके पहाड़ी जीवन के विकास का समर्थन करते हैं ।

3) नारी विषयक अधिकतर परंपरावादी दृष्टिकोण " :-

जोशीजी का नारीकी ओर देखने का दृष्टिकोण परंपरावादी है । इनकी कहानियों में नारी का चित्रण कमजोर, दुर्बल और शोषित के रूप में हुआ है । जोशीजी की पढ़ी - लिखी, नौकरी करनेवाली नगर की, पहाड़ की, विवाहित, अविवाहित, अनपढ़, घर में रहनेवाली, आर्थिक दृष्टि से पीड़ित कोई भी नारी विद्रोह नहीं करती । जैसे " मनुष्य -- चिन्ह की गोविंदी निरपराध होते हुए भी अंत - तक अत्याचार चुपचाप सहती है, " हत्यारे " की नारी अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए खुदखुशी करती है, " सिमटा हुआ दुःख " की लड़की और पत्नी दोनों भी नैतिक मूल्यों का पतन देखकर विद्रोह नहीं करती, परन्तु खुद आहत जरूर होती है । 'किनारे के लोग " की नारी एक परित्यक्ता है, जो खुद को असुंदर और कमजोर महसूस करती है । " अनचाहे " की नारी पति से पीटी जाने के बाद भी कुछ नहीं बोलती । "परिणति" की पत्नी अर्थशास्त्र में एम. ए. है । परन्तु बिगड़े हुए पति को घर में कुछ भी करने की इजाजत देती है, "स्वभाव"की पत्नी अपने ही अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित है, फिर भी पति पर विश्वास रखती है । " आदमी जमाने का " की घुग्घू बाबू की पत्नी पति के लिए मिश्राजी के पाँव छूती है, " लिखे हुए शब्द " की नारी मजबूरन वेश्या बनती है । " रास्ता रुक गया है " की पत्नी काम पर न जाने के कारण पिटी जाती है, " भेड़िए ", " चील " और " किसी एक शहर में ", " नाव पर बैठे हुए " की अविवाहित नौकरी करनेवाली युवतियाँ ऑफिस में छली

जाती हैं, परन्तु कुछ प्रतिकार नहीं करतीं । " कोई एक मसीहा " की नारी महिलाश्रम में नेता से छली जाती है, वह अपना सिर नीचे करने के सिवा कुछ नहीं करती । इसतरह जोशीजी नारी की पीड़ा को अभिव्यक्तकरते हैं । जोशीजी की कहानियों में नारी का अंतर्द्वंद्व, अकेलापन और अत्याचार चित्रित है ।

जोशीजी की दो - एक कहानियों में नारी का ठंड़ा विद्रोह भी दिखाई देता है । जैसे " नयी बात " और " बूंद पानी " की घर संभालनेवाली नारी थोडी - सी आवाज उठाती है, पर उन्हें उनके पति चुप बिठाते हैं । " काला धुआँ " की पहाड़ी नारी अत्याचार की सीमा खत्म होने के कारण जंगल में भाग जाती है । " किनारे के लोग " की तपन की पत्नी तपन की बीमारी से तंग आकर उसे छोड़ जाती है और " नाव पर बैठे हुए " वसुधा की माँ बीमार पति को चाटे लगाती है । " एक समुद्र भी " की तापस की विधवा माँ पति मरने के एक वर्ष अंदर - ही - अंदर दूसरे के साथ शादी करके नयी जिंदगी बसाती है ।

इसप्रकार जोशीजी की कहानियों में दोनों प्रकार की स्त्रियों का चित्रण है, लेकिन, अधिकता अत्याचार - सहनेवालों की है । जोशीजी अपने साक्षात्कार में " नारी को मानव - जीवन की धुरी कहते हैं, नारी एवं पुरुष दो वर्गो का समन्वय एवं सामंजस्य चाहते हैं । उनका कहना है यह सत्य ओझल होने के कारण ही नारी पर अत्याचार हो रहा है । "[2]

4) जोशीजी की कहानियों में भ्रष्ट राजनीति का चित्रण :-

जोशीजी की कई कहानियों में आजादी के बाद की राजनीति का चित्र दृष्टिगोचर होता है, जिसमें लेखक भ्रष्टराजनीति का भेद खोलकर अपना आक्रोश प्रकट करते हैं । जोशीजी अपनी सरकार की असली गाथा गाते हैं । आजादी के साथ - साथ सत्ता की कुछ कुप्रवृत्तियाँ भी हमारे देश में पनपी, जिसका प्रस्तुतीकरण जोशीजी की कहानियों में है । इनकी कहानियों में गाँव से लेकर गोल इमारत (संसद - भवन) की राजनीति के दर्शन होते हैं । एक सच्चे देशभक्त से लेकर भ्रष्ट राजनीतिज्ञ तक चित्रण है । गाँव के सरपंच, पंच से लेकर मंत्री तक और पुलिस से लेकर बड़े ऑफिसर्स के भ्रष्ट व्यवहार का लेखाजोखा इन कहानियों में हैं ।

" जलते हुए डैने " में एक सच्चे समाजसेवी पर अत्याचार कर मरवा ड़ालने का चित्र है, जिसमें छल, हिंसा और बेईमानी का उद्‌घाटन हुआ है । "कोई एक मसीहा " में नारी आश्रमों के व्यवस्थापक महिला केन्द्र को कामोपभोग का केन्द्र बनाकर भ्रष्ट नेता की आरती उतारने का चित्र है, " एक वट वृक्ष था " में जनता को टोपी पहनानेवाले नेता की कहानी है, " तलाश " राजकीय व्यवस्था, पुलिस और कानूनी व्यवस्था के अत्याचार और संसद भवन के, षड़यंत्रकारियों पर प्रकाश डालनेवाली कहानी है । " तपस्या " कहानी रथीनबाबू के माध्यमसे तपस्या पूरी न होने का अहसास दिलाती है । " आदमी जमाने का" ग्रामीण राजनीति उद्‌घाटित करती है, " एक सुकरात और " में नैतिक मूल्यों का अर्थ बताने की कोशिश हुई हैं । " "समुद्र और सूर्य के बीच " भ्रष्टमंत्री के गुनाह की गवाही है । " जो घटित हुआ " में देश की असुरक्षा का चित्र समेटा है, जिसमें हर घटनाका विपरीत अर्थ प्रस्तुत है । " अपने ही कस्बे में " सरकारी अधिकारी आने से गाँव बदलने का चित्र है । " मनुष्य - चिन्ह " में पटवारी - पुलिस से लेकर पेशकार के अत्याचार का चित्र है ।

इन कहानियों के चित्रण से ऐसा स्पष्ट होता है कि जोशीजी का दृष्टिकोण भ्रष्ट राजनीति को खत्म करने का रहा है, क्योंकि इस भ्रष्टराजनीति के कारण आम - आदमी का जीवन खतरे में पड़ गया है । उसे जिंदगी बिताना कठिन हो गया है, फिर भी वह जी रहा है । वे आम - आदमी का आक्रोश ही अपनी कहानियों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं ।

5) जोशीजी की कहानियों में अन्तर्द्वंद्व :-

सामान्यत: जोशीजी की कहानियों में आम - आदमी की अन्तर्वेदनाएँ और छटपटाहट की तस्वीरें अंकित हुई हैं । वे आदमी के बाह्य पीड़ा और मनोवैज्ञानिक पीड़ा दोनों को समान्तर अभिव्यक्त करते हैं । विशेषत: जोशी के पात्र बाह्यसंघर्ष की अपेक्षा अंतर्संघर्ष ही अधिक करते हैं । वे अपने आपसे अधिक लड़ते हैं परन्तु बाह्यरूपसे विद्रोही नहीं बनते । जोशीजी ने आदमी की अंतर्पीड़ा को अच्छी तरह से पहचानते हुए पात्रों के मन की गहराई में जाकर उनके मन का दु:ख खोजने का प्रयत्न किया है । वे अकेलापन, बेरोजगारी अतृप्ति, अस्वीकृति, विवशताएँ आदि का चित्रण अन्तर्द्वंद्व के व्दारा ही स्पष्ट करते हैं । उनकी

अधिकांश कहानियों में स्थितियों का विस्तार, तनाव दबाव और संघर्ष उभरा है । जोशीजी के " आँखें " कहानी में नई पीढ़ी के प्रति अविश्वास निर्माण हुए बाबा का आत्मसंघर्ष चित्रित है । " परिणति " की पत्नी वितस्ता अपने पत्नीत्व के प्रति अतृप्त है, जो अपने पति के आचरण से घुटन महसूस करके अपने आपसे लड़ती है । " एक समुद्र भी " का तापस सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था के बीच अपने आपसे संघर्ष करता है । इस कहानी में अंततक तापस के मन का संघर्ष चित्रित है । " नयी बात " का चंद्रा वल्लभ नयी बात सुनते - सुनते चिंतित हो गया है, अंत में वह इसलिए भयभीत है कि अब घर जाकर कौनसी " नयी बात " सुननी पड़ेगी ? वह अंततक मौन है । " बुंद पानी " का विश्वेश्वर महानगरीय आर्थिक संकट में संघर्ष कर रहा है, घर में और बाहर संघर्ष करते हुए अपना दुःख वह ऊपर से व्यक्त नहीं करता, अपना दुःख खुद ही निगलता है । और ऊपर से पत्नी को खुश करने का झूठा प्रयत्न करता है ।

जोशीजी की आत्मीय - प्रेम - संबंधों की कहानियों में अंतर्द्वंद्व चित्रित है । 5पेन से बचपन से प्रेम करनेवाली " छोटी " इ " नौकरी करते अविवाहित रहती है, वह अंततक अकेलेपन की पीड़ा सहती है । " छोटी इ " का नायक भी अपने बारे में कुछ नहीं बोलता सिर्फ छोटी " इ " के बारे में कहता है । परन्तु उसे छोटी " इ " का व्यवहार अच्छा नहीं लगता । इस कहानी में मनोवैज्ञानिक अंतर्पीड़ा विद्यमान है । " अहसास " कहानी की " वह " अपने दुःख को नींद की गोलियाँ लेकर अपना जीवन खत्म करती है । " नाव पर बैठे हुए " की वसुधा पारिवारिक समस्या और नौकरी से उलझ चुकी है क्या करूँ ? का प्रश्न उसके सामने है । " किसी एक शहर में " की नारी प्रेम और अस्तित्व से संघर्ष कर रही है । " दंशित ", " अभाव ", और " आदमियों के जंगल में " और " फासला " के नायक बेरोजगारी के कारण अंतर्पीड़ित है । वे अपने भविष्य और नसीब पर विश्वास रखकर आए दिन बिताते हैं उनमें लड़ने की जिद ही नहीं है । " आदमियों के जंगल में " का निरेन बेरोजगारी के कारण पागल - सा बन जाता है । " सिमटा हुआ दुःख " का प्रत्येक पात्र अपने आपसे संघर्षरत है । " चील ", " भेड़िए " की अविवाहित नारियाँ आर्थिक विपन्नताके लिए नौकरी कर रही हैं, परन्तु ऑफिस के माहौल से छुटकारा पाने के लिए मन - ही मन में द्वंद्व कर रही है । " अन्ततः " का का बिरजू आपने आपसे लड़ते मर जाता है । " तलाश ", " अक्षांश " में सर्वहारा व्यक्ति की मनोभावना चित्रित है ।

" एक सुकरात और " का सुकरात अंतर्पीड़ा से मर जाता है । " तपस्या " का स्वतंत्रता - सेनानी फिर तपस्या करने की ओर प्रेरित होता है । " सीमा से कुछ और आगे " का नायक अंततक मौन है ।

इसप्रकार जोशीजी के अधिक पात्र मन:स्थितियों में उलझे हुए हैं । " बरस बीतगया " की सुनिता तो मनोरुग्ण ही बन जाती है । इसतरह जोशीजी मन:स्थितीयोंका चित्रण बड़ी सफलता से करते है ।

6) जोशीजी की कहानियों का शैली - शिल्प :-

शिल्प की दृष्टि से जोशीजी की कहानियों में कई नई कहानी की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं - उसके उदाहरण हम देने जा रहे हैं -

1) सांकेतिकता :-

नई कहानी की यह एक मुख्य विशेषता जोशीजी की कहानियों में दिखाई देती है । जोशीजी की कहानियों में कभी प्रारंभ में, कभी मध्य में, कभी अंत में संकेत दिखाई देता है । " आक्षांश " जैसी कहानी तो पूरी संकेतात्मक है । जोशीजी की कहानियाँ मुख्यत: अर्न्तमुखी हैं । इसीकारण उनकी कहानियों की भाषा स्वयं सांकेतिक हो गई है । इन कहानियों के शीर्षक भी संकेत दर्शाते हैं । " रथचक्र, " यह सब " अ " संभव है ", " झुका हुआ आकाश ", " आदमियों के जंगल में ", " दंशित ", " पाषाण - गाथा ", " नयी बात ", " एक समुद्र भी ", " काला धुआँ ", रास्ता रुक गया हैं ", " भेड़िए ", " कोई एक मसीहा" आदि शीर्षक संकेत देते हैं ।

" रथ चक्र " कहानी मरने - जीने का संकेत देती हैं । जैसे " दूर कुछ गड़ढे और चमक रहे हैं, जिन्हें आम्माने जाड़ो में खुदवाया था, जिन पर पौधे अब मुझे लगाने है ।"[3] नये पौधे जीने का संकेत देते है । "

" यह सब " अ " संभव है " में महानगरीय सामान्य लोगों की मन:स्थिति का संकेत

मिलता है, जैसे ' जहाँ के लोग जीना नहीं चाहते, वे मरने का महत्व कैसे समझ सकते हैं । अत: मर ही नहीं सकते । यह सब " अ " संभव है । "[4]

" स्मृतिचित्र " में अधभरे गिलास में अटका तिनका अकेलेपन का संकेत देता है ।"[5]

" एक समुद्र भी " में महानगरीय तापस के अकेलेपन के मनस्थिति का संकेत मिलता है - जैसे " तापस स्वयं को जलाने के बदले स्टोव जलाता हैं - - - । धुआँ उगलती कॉफी का एक प्याला थामे बाहर आता है और हमेशा की तरह अकेला एक कोने में बैठ जाता है ।"[6]

" काला धुआँ " संकटके आने का संकेत देता है - जैसे, " काला धुआँ " आसमान को छू रहा है । काली लकीर सी चली गयी है दूर तक ।"[7] संकट दूर जाने का संकेत इस वाक्य में है ।

" झुका हुआ आकाश " में बेरोजगारी का संकेत मिलता है । जैसे - " रोज सुबह पेपर खोलकर देखता है । " वॉटेड के हर कॉलम को अंडरलाइन करता है ।"[8]

" अभाव " कहानी में निराश - भरे जीवन की ओर संकेत है, जैसे, - - " और फिर अपने यह हाल ! नौकरी के यह ! कल का भरोसा नहीं । - - - क्या होगा ? "[9]

" आदमियों के जंगल " में "हताश युवक की ओर संकेत है जैसे, " हर समय वह एकांत में बैठा रहता । न पढ़ता - लिखता, न घुमता - फिरता, न बोलता - चलता । खाना रख दिया तो खा लिया, नहीं तो वह भी नहीं । "[10]

" दंशित " में नीरेन का जीवन से हारने का संकेत है - " हा पराग ठीक कहता है । मैं लड़ाई में नहीं जा सकता । मुझे अब गुस्सा नहीं आता । कभी - कभी मैं स्वयं भी सोचता हूँ, मुझे गुस्सा क्यों नहीं आता है । "[11]

" अंतराल " में कस्बे के परिवर्तन का संकेत प्रारंभ में ही मिलता है - " जमीन

पहले से कुछ अधिक कट गई है । जंगल रूठकर दूर चले गए हैं । पुराने मकानों की जगह सेब के नये पेड उग आए हैं । कई वृक्ष अब - बड़े - बड़े मकानों में बदल गए है । "[12]

" रास्ता रुक गया है " शुरू से अंततक गाँव के विकास के रुकने का संकेत देता है । कालीनदी की यह काली घाटी, काले कारनामों के लिए ही नहीं, काले सांपों के लिए भी बदनाम है । काली नदी का पानी कैसा होगा - काला । फिर सोच लिजिए, " काले पानी की सजा आप बिना अपराध क्यों भुगतें ? इसलिए अपना तबादला रुकवा लिजिए, अभी कुछ बिगड़ा नहीं । "[13]

" परिणति " में वितस्ता की अंतर्वेदना का संकेत, " सारी रात सितार उसकी बाहों में लिपटा, न जाने क्यों रोता रहा । "[14] इस वाक्य से मिलता है ।

" अहसास " में मरने का संकेत बीच में ही मिलता है । जैसे - " इतने युगों के बाद आज रास्ता भूलकर आए हो । पता नहीं फिर कब - सच्ची, अब मैं अधिक बचनेवाली नहीं हूँ, सच । "[15]

" स्वभाव " में मालती के अतर्द्वंद्व का संकेत इस वाक्य से मिलता है कि " उसका मन कांच के टूटते टुकडों की तरह खनखना आता और अथाह में डूब जाता । "[16]

" चील " में बॉस के स्वाधीन होने का संकेत अंत में मिलता है - ", " इधर - उधर चीलों की तरह बिखरी फाईलों के बीच माथा टिका देती है - यह सोचकर कि अब कभी भी ऊपर नहीं उठाएगी - "[17]

" अनचाहे " में - " देखिए, मेरा हाथ टूट गया - । "[18] आत्मीय सबंध टूटने का संकेत है ।

DR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

" मनुष्य - चिन्ह " के प्रारंभ में भयंकर बात होने का संकेत मिलता है जैसे - " पानी पर आग लग गयी हैं - । "[19]

" हत्यारे " कहानी में मछुआरे की मृत्यु का संकेत अंत में है - " एक क्षीण मानव

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

छाया - सी सशंकित भाव से इधर - उधर देखती हुई दोनों हाथों को डैनों की तरह उछल - उछलकर बगल वाली चट्टान की दिशा में ओझल हो रही है । जहाँ सड़ी हुई मछली के अवशेष इधर - उधर बिखरे दिखलाई देते हैं ।"[20]

" जलते हुए डैने " में प्रगतिवादी की इच्छामूलक स्थापनाओं के प्रति संकेत किया गया है । - " उन्हे दफनाए आज कितने दिन हो गए । पर लोग कहते हैं - रात के अंधियारें में " शहीद - चौक " पर शिवदा आज बैठे दिखलाई देते हैं ।"[21] इस वाक्य में शिवदा के रक्तबीज छोड़ जाने का संकेत है ।

इसतरह जोशीजी की कहानियों में संकेत मिलते हैं ।

2) **प्रतीकात्मकता** :-

जोशीजी की " नयी बात " कहानी प्रतीकात्मक है, जिसमें नयी बात - नए संकट का प्रतीक है । जैसे, " चन्द्रा वल्लभ घर लौटने लगा तो उसके पांव कांपने लगे - न जाने उसके कानों में फुसफुसाकर गोविंदी आज कौन - सी " नयी बात " कहेगी ।"[22]

" एक वटवृक्ष था " प्रतीक, कल्पना और बोध कथा का समन्वय है । इसमें टोपी नेतागिरी का प्रतीक है - " वैसे ही इस टोपी की महिमा भी अपार है, श्रीमान जो इसे धारण करता है - वही ज्ञानवान, धनवान बन जाता है । लक्ष्मी उसकी खरीदी हुई दासी बन जाती है । भला बुरा जो कुछ भी वह कहता है, वही वेद वाक्य बन जाता है ।"[25]

इसतरह जोशीजी ने उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए प्रतीकों का उपयोग किया है ।

3) **फंतासी** :-

जोशीजी ने फंतासी का प्रयोग माध्यम के रूप में किया है । जोशीजी ने विशेषत: राजनीतिक कहानियों में अपना आक्रोश प्रकटकरने के लिए फंतासी का प्रयोग किया है । पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु के शब्दों में - " हिमांशु जोशी की कहानी " जो घटित हुआ " है नौ

अध्यायों में विभक्त है । इसमें समकालीन भारतीय जीवन की सारी विसंगतियाँ स्वैर कल्पनात्मक शिल्प में उपस्थित हैं । इस कहानी का मूल स्वर समकालीन भारतीय राजनीति की लफ्फाजी को नग्न करना है । इसमें कठोर व्यंग - भाव है और परोक्षतः आक्रोश का भी ध्वनन है । व्यंग्य के लिए इतिहास के तथ्यों का विपरीत प्रस्तुतीकरण इस कहानी का स्वैरकल्पनात्मक वैशिष्ट्य है - - - "[26]

" जो घटित हुआ " में, " पहले और दूसरे, दोनों महायुध्दों में जीत हिटलर की हुई थी । जापान ने दुनिया में सबसे पहले परमाणु बम बनाया था, जिसका प्रयोग लन्दन और वाशिंग्टन पर किया था । और इतिहास में दूसरी बार 15 अगस्त सन 1947 को भारत गुलाम बना था । "[27]

" एक वट वृक्ष था " में कल्पना का सुंदर प्रयोग हुआ है, जिससे हास्य - व्यंग निर्माण होता है ।

" ब्राम्हण पुत्र को महास्थविर सरकारी अस्पताल में जाने के लिए कहता है तो वह सरकारी अस्पताल में जाता है वहाँ बिना जाँच पड़ताल किए, उसका सिर फाड़कर कटोरी में भेजा निकाल लेते हैं । सीने पर चाकू चलाकर एक बड़ी प्लेट में कलेजा परोसते हैं । इन दोनों वस्तुओं की जांच करने के लिए डॉक्टरों का एक बोर्ड बिठलाते है ।"[28]

फंतासी में व्यंग्य भी होता है जैसे - -

" सर लगता है, इन लोगों की माँगे है । माँगे तो औरतों की हुआ करती हैं सचिव, जिनमें सिन्दूर भरा जाता है ।"[29]

" लिखे हुए शब्द " में कल्पना का प्रयोग किया गया है । जैसे - " एक इकसठ साल की बुढ़िया ने बच्चा जना है । पास पड़ोस के सब लोग इकट्ठा हो गए हैं, देखने के लिए । " अंतहीन जलते रेगिस्तान में एक कारवां भटक गया है । अन्न की अनंत खोज में करोडों अस्थि - पंजर कीडों की तरह रेंग रहे हैं । गोबर में से अन्न के दाने बीन - बीनकर खा रहे हैं । "[30] कल्पना के सहारे दरिद्रता का चित्रण इसमें किया गया है ।

4) व्यं ग्य :-

जोशीजी ने विसंगतियों को प्रकट करने के लिए व्यंग्य का उपयोग किया है । सीधी - सरल भाषाशैली में हास्य - व्यंग्य करने में सफल हुए हैं । विशेषतः जोशीजी ने संवादों में ही हास्य व्यंग्य का प्रयोग किया है ।

" एक वट वृक्ष था " कहानी में - - - - -

" तो मैं इस देश को समृध्द करने के लिए क्या करु, देव ! " हाथ जोड़कर ब्राम्हण - पुत्र ने कहा ।

" तुम सरकारी अस्पतालों में जाओ । "
" प्रभुवर, मैं अभी मोक्ष नहीं पाना चाहता । "[31]

इसमें सरकारी अस्पताल पर व्यंग्य किया है । उसी प्रकार लोग नेता के पास अपनी माँगे लेकर आते हैं तो नेता माँगों का अर्थ गलत समझता है जिससे हास्य निर्माण होता हे जैसे - - -

" सर, लगता है, इन लोगों की मांगे हैं । "

" मांगे तो औरतों की हुआ करती हैं सचिव जिनमें सिन्दूर भरा जाता है । "

" सर, ये पुरष है । अतः इनकी माँगे भी दूसरे तरह की होनी चाहिए ।"
" कैसे हैं, दिखलाओं ! हम खुद देखेंगे ।" [32]

"आँखें " जैसे दुःखात्मक कहानी में भी थोडासा व्यंग्य का पुट है ।

"आँखे कहानी के अंधे बाबा और उनके समधी दोनों बातचीत कर रहे थे, बारीश आ रही थी, उसी समय नाना बड़ी चिंता से बोले, - " अरे राम - - - सडक का पानी कमरे की ओर आ रहा है, जोशीजी ! "

" क्या कहा ? कमरे की ओर पानी आ रहा है !" विस्मय से बाबा के होंठ खुले ।

" हॉ, जोशीजी, जमीन जलमयी हो गयी है । सड़कें, नहरों की तरह लबालब भर गयी है । इतना पानी भला कहा जाएगा ? "

तिवारीजी, अब कहाँ कहाँ तक आ गया पानी ? "

थोडी देर बाद पूछा ।

" बस, कमरे में एक इंच भर गया । "

धीरे - धीरे दो इंच, तीन इंच, तेरह इंच भर गया ।

बाबा की आकृति का रंग उतरने लगा, " अब कित्ता, तिवारीजी ? '

" यही कोई तेरह - चौदह इंच ।"

" और अब ? '

" अरे, बापरे । चारपाई तक - " नाना कह ही रहे थे कि बाबा ने हड़बडाकर पानी की थाह लेने के लिए हाथ नीचे बढ़ाया, पर नानाजी ने रोक दिया बोंरा गये, क्या पानी में डूबेंगे ? " लो जोशीजी अब चारपाई तक ही पहुँच गया । चार पाई बहने ही वाली है । "

मुझे बचाओ । हाय राम - - - मैं डूब गया । " बाबा हवा में हाथ - पाँव छटपटाते हुए जोर से चिल्लाये । सब हंस पडे ।"[33] याने बूढ़े अंधे बाबा को पानी के आने की बात झूठी कहकर धोखा देते हैं और सब व्यंग्य करके हंसते हैं ।

" दंशित " कहानी में कनु और नीरेन की बातों से व्यंग्य स्पष्ट है - " हां, कहती तो ठीक हो । - जो घर का सारा भार उठा ले, अगर ऐसी औरत मिल पाती तो --- ।"

कनु बात काटती है । आश्चर्य से कहती है, " क्या कहा, औरत से शादी करोगे नीरेन दा । - - - लड़के लोग तो लडकियों से ब्याह किया करते है । "[34]

" किसी एक शहर में " कहानी के हास्य व्यंग्य में वेदना है - जैसे ", सच, कल मैं बेहद रोई - - । "

'क्यों ?

जल - तरंग का जल छलक पड़ता है । वह एका एक हंस पड़ती है - "

" रोई नहीं जी । सारी रात इंतराज करती रही । "

" किसका -- ? "

" किसी का भी नहीं । "

फिर भी । "

" नींद का । "[35]

इस तरह " वह " में "से कहते हुए व्यंग्य करती है ।

" अन्ततः " में बिरजू को बिरजुवा की बहू मुसकराकर बोली,

" ले ओ, लल्ला । गैया चराय के मिलत है माखन -

मिसरी बैल चराय के नहीं । "[36]

इसतरह जोशीजी ने सरल शब्दों मे व्यंग्य किया है ।

6) **भा षा** :-

जोशीजी की कहानियाँ मुख्यतः सीधी - सपाट शैली में लिखी गयी हैं, जिनमें कहीं भी कोई चमत्कार नहीं दिखाई देता । वे अपनी अनुभूति सहज और स्वाभाविकता से व्यक्त करते हैं । जो भी कुछ कहना है उसे सहज शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं । फिर भी इनकी कहानियाँ आकर्षक और प्रभावशाली हो गयी हैं । इनकी कहानी में कहीं भी चौकाने वाला तत्व नहीं है । वे एक बात सरलता से आरंभ करते हैं और सरलता के साथ ही समाप्त भी करते हैं ।

जोशीजी की कहानियों में घटनाओं की बहुलता है, जिसमें जीते - जागते पात्र नजर आते हैं । मूलतः इनकी संवेदना ग्रामांचल से जुड़ी है, उनकी वेदना व्यक्त करते समय लेखक की भाषा सजीव हो उठी है । उन्होंने आँचलिक कहानियों में ग्रामीण भाषा और शब्दों का प्रयोग किया है जैसे - " नयी बात " में कका की बोली " लोगों को बीमार के लिए बांस - मिसरी तक मुहय्या नहीं है - - - ।"37 " मनुष्य - चिन्ह " में " तिरिया चिरितन पुरवरस्य भागम् - " कौन जानता है । "[38]

" अंततः " में पहाडी बोली का प्रयोग है - गांव में रामलीला रचानेवाले और पाठशाला

चलानेवाले पंडित को फटकारते हुए बिरजू कहता है - असत बोलत हो । डरात होराकस से । झूठ लीला रचत हो । निगोडा । रावन उरिके उठत है । जिन्दा होई जात है । तिमंजला मा बैठि तिजारत करत है । ढोर, गंवई - गंवार समझ के हम को ठगत हो । धोखा देत हो ! झूठे राम बनत हो । - - - पहले अब राव की लंका नहीं, झूठे राम - तोरी अजुध्या जराय डारेंगे - - - फूंक डारेंगे दुनिया सारी । चाण्डाल - - ठगत हो हमें - - - !"[39]

इसतरह पहाड़ी बोली **या** ग्रामीण बोली के कारण वाक्यों में प्रभावशीलता आई है ।"

" देखे हुए दिन " में मराठी वाक्य का प्रयोग हुआ है जैसे " हया माणसाचा चेहरा पाहलेला माहित पण तो - - - । "[40]

जोशीजी पात्र के अंतस की बात बड़ी सहजता और सरलता से स्पष्ट करते है ", जो लेखक की भाषा शैली का विकसित **रूप** हैं -- जैसे, " एक समुद्र भी " में तापस स्वयं को जलाने के बदले स्टोव्ह जलाता है । धुआं उगली कॉफी का एक प्याला थामे बाहर आता है । और हमेशा की तरह अकेला ही एक कोने में बैठ जाता है - और अपने को कॉफी पिलाने लगता है । "[41]

इसी कहानी में भाषा का अति आधुनिक स्वरुप भी दिखता है - " वह झकझोरकर बासु को जगाता है । बासु आँखें खोले बिना ही रोज की तरह स्वाभाविक **रूप** से अपने शरीर के सारे कपड़े समेटकर एक ओर कर देती है - "[42] इस प्रकार " एक समुद्र भी " कहानी में तापस की अन्तर्विरोधात्मक विसंगति का चित्रण सूक्ष्मता के साथ हुआ है ।

अलग शिल्प की कहानियाँ : कुछ उपलब्धियाँ :-

हिमांशु जोशीजी की कहानियों में शिल्प की विविधता है, उनमें अनेक **नूतन** प्रयोग भी हुए हैं । जोशीजी ने विशेषतः राजनीतिक कहानियों में ही विविध प्रकार के प्रयोग किए हैं । शिल्प की दृष्टि से " एक वट वृक्ष था ", " जो घटित हुआ ", " समुद्र और सूर्य के बीच ",

"रास्ता रुक गया है । " आदि कहानियों में विशिष्टता हैं । " एक वट वृक्ष था " में कल्पना, बोध कथा और प्रतीक का समन्वय होकर एक राजनीतिक व्यंग्य प्रस्तुत हुआ है ।

।) " जो घटित हुआ " में औपन्यासिक शिल्प का प्रयोग हुआ है । इसमें कहानी को नौ अध्यायों में विभक्त किया गया हे । हर एक अध्याय की घटना अलग - अलग है । इसमें तीन - तीन पंक्तियाँ या छोटे - छोटे अनुच्छेद हैं, एक घटना के पश्चात् दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी आदि के रूप में यह कहानी प्रस्तुत है । इसमें मुक्त - कल्पना का उपयोग राजनीतिक व्यवस्था का असली रूप खोल देता है । इसमें विपरीत अर्थ प्रयोग से व्यंग्यात्मक चोट दी गई है । इसमें कविता जैसी प्रवाहात्मक शैली का उपयोग कर देश की अनेक घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है ।

" समुद्र और सूर्य के बीच " में कल्पना का अधिक उपयोग किया गया हे । ऐतिहासिक शैली में लिखी हुई इस कहानी में सपनों के तीन दृश्य हैं । इन सपनों के व्दारा भ्रष्ट राजनीति का उल्लेख किया गया है ।

" रास्ता रुक गया है । " में सांकेतिक शिल्प का प्रयोग किया गया है । इसमें काव्यात्मकता का भी प्रयोग हुआ है ।

2) " हरे सूरज का देश ", " पाषाण - गाथा ", " सीमा से कुछ और आगे " रिपोर्ताज नुमा कहानियाँ हैं । " हरे सूरज का देश " में दुहरी बुनावट है.। " पाषाण - गाथा में चित्त को आन्दोलित करनेवाली कथा है, जो कैदियों के अपराधी जीवन पर प्रकाश डालती है ।

3) " आदमी जमाने का " में सरल शब्दों में व्यंग्य किया गया है । " अक्षांश ", "स्वभाव ", " काला धुआँ ", छोटी " इ " समुद्र और सूर्य के बीच " आदि कहानियों में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है । " जलते हुए डैने " की शैली रेखाचित्र शैली के समीप पहुँचती है । " अपनें ही कस्बे में " डायरी शैली का और " अक्षांश " कहानी में पत्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । " एक सुकरात और " में प्रश्नात्मक शैली का उपयोग किया गया है । " रास्ता रुक गया है, और " दंशित " कहानियों में कहीं - कहीं काव्यात्मकता का

प्रयोग भी हो गया है ।

4) जोशीजी की कहानियों में आत्मकथनात्मक शैली का अधिक प्रयोग किया गया है । उनकी इक्यावन कहानियों में से अट्ठाईस कहानियाँ आत्मकथनात्मक शैली में लिखी गई हैं और बाईस कहानियाँ ऐतिहासिक शैली में लिखी गई हैं । इसप्रकार जोशीजी की कहानियों में आत्मकथनात्मक, पूर्वदीप्ति, ऐतिहासिक, पत्रात्मक, डायरी और प्रश्नात्मक शैलियों का प्रयोग हुआ है ।

5) जोशीजी की कहानियों का आकार लघु है, उनमें वाक्य छोटे - छोटे हैं, अनुच्छेद भी दो - तीन वाक्यों के हैं । एक - एक कहानी की शुरूवात तो किस्सागोई पद्धति से हुई है, जैसे - " एक वटवृक्ष था " -

" किसी जमाने की बात है । "[43]

6) जोशीजी की कई एक कहानियों के शीर्षक छोटे - छोटे हैं । कई कहानियों के शीर्षक वाक्यों में है जैसे -- " रास्ता रुक गया है"। ", " यह सब " अ " संभव है । "एक वट वृक्ष था । ", " जो घटित हुआ"। " कई शीर्षको के अंत में " में " का प्रयोग हुआ है, जैसे - " अपने ही कस्बे में ", " आदमियों के जंगल में", " किसी एक शहर में"दो अक्षरवाले शीर्षक हैं जैसे - " आँखें ", " चील ", " वह " । कई शीर्षक संकेतात्मक हैं, जैसे - " एक समुद्र भी ', " समुद्र और सूर्य के बीच ", " एक सुकरात और", " नाव पर बैठे हुए ", " सीमा से कुछ और आगे", " रास्ता रुक गया है " आदि ।

7) जोशीजी की कहानियों में पात्रों के नाम छोटे-छोटे और आकर्षक हैं, जैसे " छौटी " इ" " हसमुख ", केकी, कनु, लाभू, रिचा, नीरेन, जितेन आदि । कई कहानियों में नाम ही नहीं हैं, उत्तम पुरुष एकवचन " मैं " और अन्य पुरुष एकवचन " वह " का इस्तेमाल किया गया है ।

8) जोशीजी की कहानियों में आँचलिक, अँग्रेजी, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्द मिलते हैं, परन्तु अंग्रेजी शब्दों की बहुलता है ।

जोशीजी की कहानियों में निम्नप्रकार के शब्द - प्रयोग की बहुलता है - जैसे

हाव - भाव, वक्त - बेवक्त, जान - बूझकर,

धूप - छांव, उमड़ते - घुमड़ते, झाड - पोंछकर आदि ।

शब्दों की पुनरुक्ति जैसे -

बार - बार, भारी - भारी, तरह - तरह, चुप - चुप, सुबह - सुबह, खड़ा - खड़ा, भिंचा - भिंचा, धीरे - धीरे, हौले - हौले, टिक - टिक, आदि लाद - लादकर, तडप - तड़पकर, छील - छीलकर, फुस - फुसाकर, परेशान - सा, आहट - सी, भयस्त्र-से.

फुसफुसाहट की - सी, मौत का - सा आदि

बड़बड़ाता	गडगडाहट	लुहुलुहान	लिखावट
हड़बड़ाता	छटपटाहट	टिम-टिमता	छटपटाता

सेंवार की तरह, पिल्ले की तरह, पागलों की तरह, मछली की त्रह मगर मच्छ की तरह, गूंगे की तरह, खुंटे की तरह, पानी की तरह आदि

सीपी-जैसे		कुछ - न - कुछ
भोटियों - जैसे		आदमी - ही - आदमी
बासुरी - जैसी		अधिक - से - अधिक
घर का जैसा		पूरी - की - पूरी
फीते की जैसी		

ऐसे बहुत शब्द मिलते हैं ।

जोशीजी की कहानियों में मुहावरों का प्रयोग भी दिखाई देता है, जैसे --

नौ दो ग्यारह	दस से नौ	घर का नाज बेचना
देहरी लिपना	तिल का ताड	बैल बेचकर सोना
पानी भरना	दिन - दुनिया	गले में पत्थर जम जाना
तिनका तोड़ना	पत्थर के पहाड़	भूचाल से धरती फटना
दम तोडना	नाक कटाना	आसमान के तारे तोडना

मारा-मारा फिरना	मुह सिलाना	धरती में धसना
दहाड मारना	दीवारे के - कान होना	मुँह खुला का खुला रहना
बीड़ा उठाना	सीने पर - पत्थर धरना	कुल के कपुत
अंगुली उठाना	मुह निचोडना	रोंगटे खडे होना
दात पीसना	जुई मारना	शबरी के बेर
दिन दहलाना	डोरे डालना	आग पर घी छूटना
तिनके का सहारा	दाँत दिखला देना ।	

इस प्रकार जोशीजी की कहानियों में भाषा, शैली, शिल्प में अनेक प्रयोग हुए हैं ।

उसी प्रकार संवेदना की दृष्टि से उनकी कहानियाँ प्रभावशाली हो गई हैं । उनका कथ्य सच्चाई का प्रतीक है, जिसमें भोगा हुआ, जीया हुआ और करीब से पहचाना हुआ दु ख है । इसलिए उनकी भाषा इप्सित अर्थ की ही अभिव्यंजना करती है । उनकी सीधी सपाट शैली और सीधे - साधे शब्द दैनंदिन जीवन के सुख - दु:ख को बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं ।

****

संदर्भ

			पृष्ठ क्र
1)	हिमांशु जोशी	मेरी रचना प्रक्रिया - लेख (आठवाँ स्वर)	387
2)	- " -	साक्षात्कार	4
3)	- " -	इक्यावन कहानियाँ	277
4)	- " -	- " -	297
5)	- " -	- " -	55
6)	- " -	- " -	70
7)	- " -	- " -	105
8)	- " -	- " -	115
9)	- " -	- " -	120
10)	- " -	- " -	137
11)	- " -	- " -	140
12)	- " -	- " -	181
13)	- " -	- " -	196
14)	- " -	- " -	236
15)	- " -	- " -	247
16)	- " -	- " -	265
17)	- " -	- " -	346
18)	- " -	- " -	363
19)	- " -	- " -	298
20)	- " -	- " -	376
21)	- " -	- " -	22
22)	- " -	- " -	38
23)	- " -	- " -	61
24)	- " -	- " -	200
25)	- " -	- " -	351

26)	पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु	"नई कहानी के विविध प्रयोग	183
27)	हिमांशु जोशी	इक्यावन कहानियाँ	206
28)	- " -	- " -	63
29)	- " -	- " -	64
30)	- " -	- " -	322
31)	- " -	- " -	63
32)	- " -	- " -	64
33)	- " -	- " -	83-84
34)	- " -	- " -	143
35)	- " -	-" -	160
36)	- " -	- " -	190
37)	- " -	- " -	35
38)	- " -	- " -	299
39)	- " -	- " -	192
40)	- " -	- " -	277
41)	- " -	- " -	70
42)	- " -	- " -	75
43)	- " -	- " -	59

****

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR